प्रातः क्लास 25/2/68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशांति। सुप्रीम टीचर बैठकर बच्चों को पढ़ाते हैं। बच्चे जानते हैं कि परमपिता परमात्मा पिता भी है तो टीचर भी है। ऐसा पढ़ाते हैं तो और कोई पढ़ा न सके। तुम कहते हो शिवबाबा हमको पढ़ा रहे हैं। बाबा कोई एक का नहीं है, बाबा तो सभी का है ना। सभी को पढ़ा रहे हैं। एक पढ़ाई है स्थूल, दूसरी है गुप्त। मनमनाभव, मद्याजीभव। उनका अर्थ समझाते हैं मुझे याद करो। बच्चे तो अभी समझदार हुए हैं। बेहद का बाप कहते हैं तुम्हारा वर्सा तो है ही। यह कब भूलना न चाहिए। बाप आत्माओं से ही बात करते हैं। अभी तुम जीवात्माएँ हो ना। बेहद का बाप भी निराकार है। तुम जानते हो इस तन द्वारा हमको पढ़ा रहे हैं। और कोई के लिए ऐसे नहीं कहेंगे। स्कूल में टीचर पढ़ाते हैं तो कहेंगे लौकिक टीचर लौकिक बच्चों को पढ़ाते हैं। यह पारलौकिक टीचर पारलौकिक बच्चों को पढ़ाते हैं। तुम भी पारलौकिक मूलवतन के वासी हो। बाप भी परलोक में रहते हैं। बाप कहते हैं मैं शांतिधाम का निवासी हूँ। तुम भी वहाँ के निवासी हो। हम दोनों एक ही धाम के निवासी हैं। तुम अपने को आत्मा समझो। हम भी परम–आत्मा हैं। अभी तुम यहाँ पार्ट बजा रहे हो। पार्ट बजाते–2 तुम पतित बन गए हो। यह सारा बेहद का माण्डवा है जिसमें यह खेल होता है। यह भी सिर्फ तुम ही जानते हो कि यह बेहद का खेल है। इसमें दिन और रात भी होते हैं। सूर्य और चाँद कितने बड़े बेहद की बत्तियाँ हैं। यह है ही बेहद की बात। अभी तुमको ज्ञान है। रचता ही आकर रचता और रचना का परिचय देते हैं। बाप कहते हैं हम तुमको रचना के आदि–मध्य–अंत का राज़ सुनाने आया हूँ। यह पाठशाला है। पढ़ने वाला अभोक्ता है। ऐसे और कोई नहीं कहेंगे कि हम अभोक्ता हैं। अहमदाबाद में एक साधू कहता था; परन्तु उसकी ठगी पकड़ी गई। इस समय तो ठगी भी बहुत निकल पड़ी है। वेषधारी बहुत हैं। इनका तो कोई वेष है नहीं। मनुष्य समझते हैं कृष्ण ने गीता सुनाई। तो आजकल कितने कृष्ण बन पड़े हैं। अभी इतने कृष्ण तो होते नहीं। यहाँ तो शिवबाबा आकर हमको पढ़ाते हैं। आत्माओं को सुनाते हैं। तुमको बार–2 कहा गया है अपन को समझ आत्मा(भाई) को सुनाओ। बाबा की नॉलेज हम भाइयों को सुनाते हैं। मेल अथवा फिमेल दोनों भाई हैं। ब्रदर्स हैं। इसलिए बाप कहते हैं तुम सब मेरे वर्से के हकदार हो। वैसे फिमेल को वर्सा नहीं मिलता है; क्योंकि उनको तो ससुरघर जाना पड़ता है। यहाँ तो सभी है ही आत्माएँ। अशरीरी ही होकर जाना है घर। अभी जो तुमको ज्ञान–रत्न मिलती हैं, यह अविनाशी रत्न बन जाती हैं। आत्मा ही ज्ञान का सागर बनती है ना। आत्मा ही सब कुछ करती है; परन्तु मनुष्यों को देहाभिमान होने कारण देही–अभिमानी बनते नहीं हैं। अभी तुमको देही–अभिमानी बन एक बाप को याद करना है। कुछ तो मेहनत चाहिए ना। लौकिक गुरु को कितना याद करते हैं। मूर्ति रख देते हैं। अभी कहाँ शिव का चित्र, कहाँ मनुष्य का चित्र। रात–दिन का फर्क है। वह गुरु का फोटो पहन लेती है। पति लोग को अच्छा नहीं लगता है कि दूसरे का फोटो पहने। हाँ, शिव का पहनेंगे तो वह सबको अच्छा लगेगा; क्योंकि वह तो परमपिता परमात्मा है ना। उनका चित्र तो होना चाहिए। यह है गले का हार बनाने वाला। तुम रुद्रमाला के मोती बनेंगे ना। यूँ तो सारी दुनिया रुद्रमाला भी है, प्रजापिता ब्रह्मा की भी माला है। ऊपर में सिजरा तो है ना। वह होते हैं हद के सिजरे। यह है बेहद की बात। जो भी मनुष्य मात्र हैं सभी की माला है। आत्मा कितनी छोटी ते छोटी बिन्दी है। बिल्कुल छोटी बिन्दी है। ऐसे–2 बिन्दी देते जाओ अनगिनत हो जावेंगे। गिनती करते–2 ही तुम थक जावेंगे। बुद्धि यह ठहर सकता है। बरोबर यह आत्माओं का झाड़ कितना छोटा होगा। ब्रह्म के बहुत थोड़ी जगह में रहते हैं। वह फिर यहाँ आते हैं पार्ट बजाने। तो फिर यहाँ कितनी लम्बी–चौड़ी दुनिया है। कहाँ–2 एरोप्लैन में जाते हैं। वहाँ तो एरोप्लैन आदि की दरकार ही नहीं। आत्माओं का छोटा सा झाड़ है। यहाँ मनुष्यों का कितना बड़ा झाड़ है। यह सब हैं प्रजापिता ब्रह्मा की संतान, जिसको कोई एडम–आदीदेव कहते हैं। मेल–फिमेल तो ज़रूर है। यह तुम्हारा है ही प्रवृत्तिमार्ग। निवृत्तिमार्ग का खेल होता नहीं। एक हाथ से क्या होगा? दोनों फीते चाहिए ना। दो हैं तो दोनों

आपस में रेस करते हैं। दूसरा फीता साथ न देता तो ढीले पड़ जाते हैं; परन्तु एक के कारण ठहर थोड़े ही जाना चाहिए। यह तो है प्रवृत्तिमार्ग। पहले–2 पवित्र प्रवृत्तिमार्ग, फिर होता है अपवित्र। अभी तो यह पतित, भ्रष्टाचारी दुनिया है। कहते भी हैं; परन्तु यथार्थ रीति समझते नहीं हैं। बरोबर पहले–2 इन ल०ना० का राज्य था। पवित्र प्रवृत्तिमार्ग था। फिर बाद में यह निवृत्तिमार्ग वाले हठयोगी हठयोग आदि सिखलाते हैं। उनसे कोई की गति–सद्गति नहीं होती। गिरते ही जाते हैं। तुम्हारी बुद्धि में है यह झाड़ कैसे बढ़ता है, कैसे एड होते जाते हैं। ऐसा झाड़ कोई निकाल न सके। कोई की (बुद्धि) में रचना की आदि–मध्य–अंत का नॉलेज है नहीं। इसलिए बाबा ने यह कहा था यह भी लिखो हमने रचता द्वारा रचता और रचना के आदि–मध्य–अंत का नॉलेज पाया है। हम समझा सकते हैं। वह न तो रचता और न रचना को ही जानते हैं। अगर परम्परा यह ज्ञान चला आता तो बतावे ना। सिवाय तुम ब्रह्माकुमार–कुमारियों और कोई बता न सके। तुम जानते हो हम ब्राह्मणों को ही परमपिता परमात्मा पढ़ाते हैं। हम ब्राह्मणों का ही उत्तम ऊँच ते ऊँच धर्म है। चित्र भी ज़रूर दिखाना पड़े। चित्र बिगर किसकी बुद्धि में बैठेगा नहीं। चित्र बहुत बड़ी होनी चाहिए। विराट धर्मों का झाड़ कैसे बढ़ता है यह भी समझाया है। आगे तो कहते थे हम आत्मा सो परमात्मा, परमात्मा सो आत्मा। अभी बाप ने उनका भी अर्थ बताया है। इस समय हम सभी ब्राह्मण हैं। फिर हम सो देवता बनेंगे नई दुनिया में। अभी हम पुरुषोत्तम संगमयुग पर हैं अर्थात् यह है पुरुषोत्तम बनने का संगमयुग। यह सब तुम ही समझा सकते हो। रचता और रचना का अर्थ, ओम का अर्थ, हम सो का अर्थ। ओम माना हम आत्मा है फर्स्ट। फिर यह शरीर है। आत्मा अविनाशी, शरीर विनाशी। हम यह शरीर धारण कर पार्ट बजाते हैं। इसको कहा जाता है आत्माभिमानी। हम आत्मा ने यह फलाना नाम डाला है। हम आत्मा फलाना पार्ट बजा रहे हैं। हम आत्मा यह करते हैं। हम आत्मा परमात्मा के बच्चे हैं। कितना वण्डरफुल ज्ञान है। यह ज्ञान बाप में ही है इसलिए बाप को बुलाते हैं। बाप है ज्ञान का सागर। उनके भेंट में फिर है अज्ञान का सागर भक्तिमार्ग के गुरुलोग। घोर अंधियारा हो जाता है। फिर जब बाप आते हैं तो घोर सोझरा हो जाता है। आधा कल्प है ज्ञान, आधा कल्प है अज्ञान। अज्ञान भक्तिमार्ग को कहा जाता है। यह भी कोई समझते नहीं हैं; क्योंकि ज्ञान का पता ही नहीं है। ज्ञान कहा ही जाता है रचता द्वारा रचना को जानना। तो ज़रूर रचता में ही ज्ञान है ना। इसलिए उनको क्रियेटर कहा जाता है। मनुष्य समझते क्रियेटर ने रचना रची है। बाप समझाते हैं यह तो अनादि बना–बनाया खेल है। हमको बुलाते ही हैं हे पतित–पावन, तो सभी पतित हैं ना। यह सृष्टि ही पतित है। मुझे बुलाते भी हैं पतित सृष्टि में कि आकर पावन बनाओ। तो रचता कैसे कहेंगे? रचता तब कहें जबकि प्रलय हो जावे फिर रचे। बाप तो पतित दुनिया को पावन बनाते हैं। यह जो सारा विश्व का झाड़ है उनके आदि–मध्य–अंत को तुम मीठे–2 बच्चे ही जानते हो। जैसे माली लोग हरेक बीज और झाड़ को जानते हैं ना। बीज को देखने से सारा झाड़ बुद्धि में आ जाता है। यह है ह्युमैनिटी का बीज। उनको कोई नहीं जानते हैं। गाते भी हैं परमपिता परमात्मा मनुष्य सृष्टि का बीजरूप निराकार है। सत्–चित, आनंद स्वरूप है। सुख–शांति, पवित्रता का सागर है। तुम जानते हो सारा ज्ञान परमपिता परमात्मा इस शरीर द्वारा ही दे रहे हैं। आत्मा ही शरीर द्वारा पार्ट बजाती है। बाप को करन–करावनहार, पतित–पावन भी कहते हैं। तो ज़रूर यहाँ आवेंगे ना। पतितों को पावन कोई प्रेरणा से थोड़े ही बनावेंगे। ज़रूर यहाँ आना पड़े। वही सबको प्योर बनाकर ले जाते हैं। वह बाप ही तुम बच्चों को पाठ पढ़ा रहे हैं। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। पुरुषोत्तम संगमयुग किसको कहा जाता है इस पर भी तुम भाषण कर सकते हो। भ्रष्ट, कनिष्ट, तमोप्रधान से श्रेष्ठ सतोप्रधान बनते हैं। तुम्हारे पास तो टॉपिक बहुत ही हैं। यह कलियुगी तमोप्रधान दुनिया सतोप्रधान पावन कैसे बनती है यह भी समझाने लायक है; परन्तु बंदर बुद्धि कुछ भी समझते नहीं। आगे .... सुनते रहेंगे। छोड़ देंगे फिर आवेंगे। गति–सद्गति की हट्टी एक ही है। तुम कह सकते हो सर्व

का सद्गति दाता एक ही परमपिता परमात्मा शिव है। उनको ही श्री–2 कहते हैं। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ परमपिता परमात्मा। वह बैठ श्रेष्ठ बनाते हैं। श्रेष्ठ है सद्गति। भ्रष्ट है कलियुग। कहते भी हैं भ्रष्टाचारी हैं; परन्तु अपन को नहीं समझते हैं। पतित दुनिया में एक भी श्रेष्ठ नहीं। श्री–2 जब आवे तब ही श्री बनावे। श्री–2 का टाइटल जो देवताओं आदि को सतयुग में था सो अंत में आकर इन कलियुगी गवर्मेन्ट ने लिया है। यहाँ तो मुसलमान आदि सबको श्री–2 कहते हैं। श्री अक्षर है ही पवित्रता का। दूसरे धर्म वाले अपन को श्री–2 नहीं कहते हैं। श्री पोप कहेंगे क्या? यहाँ तो सभी को कहते रहते। अर्थ कुछ भी नहीं जानते हैं। हंस मोती चुगने वाले, बगुले गंद खाने वाले, फर्क तो है ना। यह देवताएँ हैं फूल। यहाँ तो सभी हैं काँटे। वह है गॉर्डन ऑफ अल्ला। बाप तुमको फूल बना रहे हैं। बाकी फिर फूलों में है वैराइटी। सबसे अच्छा फूल होता है किंग ऑफ फ्लावर्स। इन ल०ना० को नई दुनिया के किंग–क्वीन फ्लावर्स कहेंगे। तो तुम बच्चों को आंतरिक खुशी होनी चाहिए। इसमें बाहर से कुछ करना नहीं होता है। यह बत्तियाँ आदि जलाने का भी अर्थ चाहिए ना। शिव जयंती पर जलाना चाहिए, न कि दिवाली पर। दीवाली पर लक्ष्मी को आवाहन करते हैं। उनसे पैसा मांगते हैं। जबकि भण्डारा भरने वाला तो शिव भोला भण्डारी ही है। लक्ष्मी क्या भण्डारा भरेगी! तुम जानते हो शिवबाबा द्वारा हमारा अखुट खजाना भर जाता है। यह ज्ञान रत्न दिन है ना। वहाँ भी तुम्हारे पास अथाह धन रहता है। नई दुनिया में तुम मालामाल हो जावेंगे। बुद्धि से समझते हैं सतयुग में ढेर के ढेर हीरे–जवाहर थे। फिर वही होंगे। मनुष्य मूँझते हैं यह सभी खत्म हो जावेंगे फिर कहाँ से आवेंगे? खानियाँ खा.... हो गईं, पहाड़ियाँ आदि टूट गए, फिर कैसे होंगे? बोलो, हिस्ट्री रिपीट होती है। जो कुछ था, सो फिर होगा। तुम बच्चे पुरुषार्थ कर रहे हो स्वर्ग का मालिक बनने। स्वर्ग की हिस्ट्री–जॉग्राफी फिर रिपीट होगी। गीत में भी है– बाबा, आपने तो सारी सृष्टि, सारा समुद्र, सारी पृथ्वी हमको दे दी। कोई भी छीन नहीं सकता। उसके भेंट में अभी क्या है। एक/दो में ज़मीन के लिए, पानी लिए, भाषा के लिए लड़ते रहते हैं।

स्वर्ग का रचता बाप का जन्मदिन मनाया जाता है। ज़रूर उसने स्वर्ग की बादशाही दी होगी। अभी तुमको बाप पढ़ा रहे हैं। यहाँ तुमको शारीरिक नाम–रूप से न्यारा हो अपन को आत्मा समझना है। पवित्र बनना है या तो योगबल से या तो सज़ा खाकर। फिर पद भी कम हो जाता है। स्टूडेंट की बुद्धि में रहता है ना हम इतने मार्क्स से पास होते हैं। टीचर ने इतना पढ़ाया। फिर टीचर को भी सौगात दे देते हैं। यह तो बाप तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं। तो तुम फिर भक्तिमार्ग में उनको याद करते रहते हो। बाकी (बाप) सौगात आदि क्या करेंगे? वह तो अभोक्ता है ना। हम उनको क्या सौगात देंगे! वहाँ तो उनको याद भी नहीं करेंगे। बाप कहते हैं मैं तुमको विश्व की बादशाही देता हूँ। मेरी आखिर में क्या आवेगा? यहाँ तो जो भी देखता हूँ, कुछ भी नहीं है। यह पुरानी छी–2 डर्टी दुनिया है तब तो मुझे बुलाते हैं। तुम हमारा इतना अपकार करते आए हो। हम फिर भी उपकार करते हैं। पतित से पावन बनाते हैं। बेहद का बाप है ना। इस खेल को याद करना चाहिए। मेरे में रचना के आदि–मध्य–अंत का ज्ञान है, जो तुमको सुनाता हूँ। तुम अभी सुनते हो फिर भूल जावेंगे। 5000 वर्ष बाद फिर चक्र पूरा होगा। तुम्हारा पार्ट कितना लवली है। तुम सतोप्रधान लवली बनते हो फिर तमोप्रधान भी बनते हो। तुम ही बुलाते हो– बाबा, आओ। टीचर है तो उनकी श्रीमत पर चलना चाहिए ना। गफलत न करनी चाहिए। कई बच्चे मतभेद में आकर पढ़ाई ही छोड़ देते हैं। श्रीमत पर न चलेंगे, पढ़ेंगे ही नहीं तो नापास भी तुम होंगे। यह देहाभिमान होता है। बाप कहते हैं अपन पर रहम करो। हरेक को पढ़कर अपन को राज–तिलक देना है। बाप को तो है पढ़ाने की ड्युटी। इसमें आशीर्वाद की बात नहीं। फिर तो सभी पर करनी पड़े। यह कृपा आदि भक्तिमार्ग में माँगते हैं। यहाँ वह बात नहीं। अच्छा, मीठे–2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप रूहानी बच्चों प्रति नमस्ते।

✶✶✶ ओमशांति ✶✶✶